॥ श्रीहरिः ॥

# गीता-दैनन्दिनी

गीताप्रेस, गोरखपुर

[illegible] सं० २०५८-५९ ]

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् । परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् । ११ ।
मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः । राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः । १२ ।

सूर्यो० ५ । ५ पञ्चक समाप्त दिनमें १० । १५ बजे, भद्रा रात्रिमें १ । ५४ बजेसे सूर्या० ६ । ५४

आज सुश्री [illegible] देवी को [illegible] की प्रधानाचार्या
अन्य रूपों के लिये [illegible] पचास रुपये दिये।
पत्रों के लिये [illegible] पत्रके दो २ दिए गए।
श्री. कृष्णनाथ सिंह, [illegible] को
संबोधित था डा० स्वामीनाथ त्रिपाठी एवं
श्री नरेन्द्र जी को 'विज्ञप्ति-निवेदन'
राष्ट्रीय-स्वयंसेवक-संघ कार्यालय प्रभारी
को राजेन्द्र [illegible] संस्थापक के
प्रतीक:- देवी की प्रतिमूर्ति' प्रत्यक्ष की
पत्राक प्रतियों का [illegible] लोग के लिये
जो [illegible] में [illegible]
किया जायेगा। नन्दकिशोर [illegible]
[illegible] को [illegible]
[illegible]

मेरे परमभावको न जाननेवाले मूढ़ लोग मनुष्यका शरीर धारण करनेवाले मुझ सम्पूर्ण भूतोंके महान् ईश्वरको तुच्छ समझते हैं अर्थात् अपनी योगमायासे संसारके उद्धारके लिये मनुष्यरूपमें विचरते हुए मुझ परमेश्वरको साधारण मनुष्य मानते हैं। वे व्यर्थ आशा, व्यर्थ कर्म और व्यर्थ ज्ञानवाले विक्षिप्तचित्त अज्ञानीजन राक्षसी, आसुरी और मोहिनी प्रकृतिको ही धारण किये रहते हैं॥ ११-१२॥

[illegible] की [illegible] में [illegible]
[illegible]

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः। भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्। १३।
सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः। नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते। १४।

सूर्यो० ५। ५ भद्रा दिनमें १। २६ बजेतक सूर्या० ६। ५४

आज- [illegible] ५ पोस्टकार्ड २ रु०, मुंशी अपने [illegible] के लिये मंगाया। घरमें दर्जी १० [illegible] की [illegible] को दी चारसौमें दिये।

श्री इन्द्रजीत शर्मा, मुजफ्फरपुर को [illegible] के [illegible] के लिये दो पत्र विस्तृत पत्र लिखा। आज मैं [illegible], [illegible] के श्री कृष्ण[illegible] जी को भी पत्र, तथा श्री [illegible] शर्मा [illegible] और [illegible] श्री [illegible] को [illegible] के [illegible] को भी पत्र लिखा है।

परन्तु हे कुन्तीपुत्र! दैवी प्रकृतिके आश्रित महात्माजन मुझको सब भूतोंका सनातन कारण और नाशरहित अक्षरस्वरूप जानकर अनन्य मनसे युक्त होकर निरन्तर भजते हैं। वे दृढ़ निश्चयवाले भक्तजन निरन्तर मेरे नाम और गुणोंका कीर्तन करते हुए तथा मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करते हुए और मुझको बार-बार प्रणाम करते हुए सदा मेरे ध्यानमें युक्त होकर अनन्य प्रेमसे मेरी उपासना करते हैं॥ १३-१४॥

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते। एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम्। १५।
अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्। मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्। १६।

सूर्यो० ५। ६ **योगिनी एकादशीव्रत ( सबका )** सूर्यां० ६। ५४

आज . आपके समीप देवीपाके [illegible]
को पत्र लिखा... कृष्ण कुमार शर्मा, अधिवक्ता, [illegible]
तथा डा० - श्री [illegible] शर्मा - श्री सिद्ध [illegible] शास्त्री जी
पटना के पते पर दूधनाथ सिंह - विजय कुमार तथा [illegible]
श्री पृथ्वीराज चन्द्र शर्मा आदि को पत्र लिखा। अन्य आवश्यकताओं
श्री दूधनाथ सिंह को डा० श्रीकृष्ण सिंह [illegible] बिहार
तथा राष्ट्रकवि, [illegible] के स्वर्गीय डा० रामधारी सिंह दिनकर
के जन्म चित्र-स्लाइड्स में नव-काशी के [illegible] सत्संग भवन
के लिये लिखा कि गुरुपूर्णिमा पर वे [illegible] चित्र लावें।

दूसरे ज्ञानयोगी मुझ निर्गुण-निराकार ब्रह्मका ज्ञानयज्ञके द्वारा अभिन्नभावसे पूजन करते हुए भी मेरी उपासना करते हैं और दूसरे मनुष्य बहुत प्रकारसे स्थित मुझ विराट्स्वरूप परमेश्वरकी पृथक्-भावसे उपासना करते हैं। क्रतु मैं हूँ, यज्ञ मैं हूँ, स्वधा मैं हूँ, ओषधि मैं हूँ, मन्त्र मैं हूँ, घृत मैं हूँ, अग्नि मैं हूँ और हवनरूप क्रिया भी मैं ही हूँ॥ १५-१६॥

**अ० ९ ] आषाढ़ कृष्ण ३०, सं० २०६२, बुधवार, JULY 6. 2005 [ दिन १८७**

**येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः। तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम्। २३।**
**अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च। न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते। २४।**

सूर्यो० ५। ७ **अमावास्या** सूर्या० ६। ५४

आज दो पोस्टकार्ड के पत्र - एक पारसनाथ पाँड़े
गो गौरा ([illegible]) तथा दूसरा [illegible] के श्री राजेन्द्र शर्मा
उत्तर दोनों को लिखा कि मठ दशाश्वमेध रोड
आप कभी आयेंगे तो, मैं मठ में। [illegible] लोलार्क कुण्ड देखें
की लाइब्रेरी देखें श्री कौशिक सत्संग भवन में स्थापित
श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती पुस्तकालय में ३६ आलमारियों
में संग्रहीत सभी पुस्तक धार्मिक ग्रंथ कोई देखेंगे। भवन में
डा० हेडगेवार संस्थापक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। तथा
उनके बाद बालासाहब देवरस तथा माधवराव गोलवलकर के
चित्र भी देखेंगे। डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी का भी
चित्र वहाँ लगा है।

हे अर्जुन! यद्यपि श्रद्धासे युक्त जो सकाम भक्त दूसरे देवताओंको पूजते हैं, वे भी मुझको ही पूजते हैं; किन्तु उनका वह पूजन अविधिपूर्वक अर्थात् अज्ञानपूर्वक है। क्योंकि सम्पूर्ण यज्ञोंका भोक्ता और स्वामी भी मैं ही हूँ; परन्तु वे मुझ परमेश्वरको तत्त्वसे नहीं जानते, इसीसे गिरते हैं अर्थात् पुनर्जन्मको प्राप्त होते हैं॥ २३-२४॥

२१८ दिन] श्रावण शुक्ल १, सं० २०६२, शनिवार, AUG. 6. 2005 [गीता

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः। दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम्। ९।
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् । अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम्। १०।

सूर्यो० ५। २३ सूर्यां० ६। ४१

आज डा० प्रदीप पाण्डेय, कछवा, स्वपन को एक पत्र लिफाफे में लिख छोड़ा।

सञ्जय बोले—हे राजन्! महायोगेश्वर और सब पापोंके नाश करनेवाले भगवान्ने इस प्रकार कहकर उसके पश्चात् अर्जुनको परम ऐश्वर्ययुक्त दिव्यस्वरूप दिखलाया। अनेक मुख और नेत्रोंसे युक्त, अनेक अद्भुत दर्शनोंवाले, बहुत-से दिव्य भूषणोंसे युक्त और बहुत-से दिव्य शस्त्रोंको हाथोंमें उठाये हुए, ॥ ९-१० ॥

# संक्षिप्त पञ्चाङ्ग

## ( दिनाङ्क, वार, तिथि, घटी, नक्षत्र, घटीसहित )

| सितम्बर २००५ | | | | | | अक्टूबर २००५ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भाद्रपद-आश्विन, सं० २०६२ | | | | | | आश्विन-कार्तिक, सं० २०६२ | | | | | |
| दिनाङ्क | वार | तिथि | घटी | नक्षत्र | घटी | दिनाङ्क | वार | तिथि | घटी | नक्षत्र | घटी |
| १ | गुरु | भाद्र०कृ०१३ | ३४ | पुष्य | १४ | १ | शनि | आश्विन कृ०१३ | १५ | पू०फा० | ५० |
| २ | शुक्र | १४ | ३९ | श्लेषा | २० | २ | रवि | १४ | २० | उ०फा० | ५५ |
| ३ | शनि | ३० | ४४ | मघा | २७ | ३ | सोम | ३० | २३ | हस्त | ५९ |
| ४ | रवि | भाद्र०शु०१ | ४८ | पू०फा० | ३३ | ४ | मंगल | आश्विन शु०१ | २५ | चित्रा | ६० |
| ५ | सोम | २ | ५१ | उ०फा० | ३७ | ५ | बुध | २ | २६ | चित्रा | २ |
| ६ | मंगल | ३ | ५३ | हस्त | ४१ | ६ | गुरु | ३ | २५ | स्वाती | ३ |
| ७ | बुध | ४ | ५४ | चित्रा | ४४ | ७ | शुक्र | ४ | २३ | विशाखा | ४ |
| ८ | गुरु | ५ | ५३ | स्वाती | ४५ | ८ | शनि | ५ | २१ | अनु० | ३ |
| ९ | शुक्र | ६ | ५१ | विशाखा | ४५ | ९ | रवि | ६ | १७ | ज्येष्ठां | १ |
| १० | शनि | ७ | ४८ | अनु० | ४४ | १० | सोम | ७ | १२ | पू०षा० | ५५ |
| ११ | रवि | ८ | ४४ | ज्येष्ठा | ४२ | ११ | मंगल | ८ | ७ | उ०षा० | ५१ |
| १२ | सोम | ९ | ४० | मूल | ३९ | १२ | बुध | ९ | १ | श्रवण | ४७ |
| १३ | मंगल | १० | ३४ | पू०षा० | ३५ | १३ | गुरु | ११ | ४९ | धनिष्ठा | ४३ |
| १४ | बुध | ११ | २८ | उ०षा० | ३३ | १४ | शुक्र | १२ | ४३ | शत० | ३९ |
| १५ | गुरु | १२ | २२ | श्रवण | २७ | १५ | शनि | १३ | ३८ | पू०भा० | ३५ |
| १६ | शुक्र | १३ | १६ | धनिष्ठा | २३ | १६ | रवि | १४ | ३३ | उ०भा० | ३२ |
| १७ | शनि | १४ | १० | शत० | १९ | १७ | सोम | १५ | २८ | रेवती | २९ |
| १८ | रवि | १५ | ५ | पू०भा० | १५ | १८ | मंगल | का०कृ०१ | २५ | अश्विनी | २८ |
| १९ | सोम | आश्विन कृ०२ | ५५ | उ०भा० | १२ | १९ | बुध | २ | २३ | भरणी | २७ |
| २० | मंगल | ३ | ५२ | रेवती | १० | २० | गुरु | ३ | २१ | कृत्तिका | २८ |
| २१ | बुध | ४ | ४९ | अश्विनी | ९ | २१ | शुक्र | ४ | २२ | रोहिणी | २९ |
| २२ | गुरु | ५ | ४८ | भरणी | ८ | २२ | शनि | ५ | २३ | मृग० | ३३ |
| २३ | शुक्र | ६ | ४८ | कृत्तिका | ९ | २३ | रवि | ६ | २६ | आर्द्रा | ३७ |
| २४ | शनि | ७ | ५० | रोहिणी | ११ | २४ | सोम | ७ | २९ | पुन० | ४२ |
| २५ | रवि | ८ | ५२ | मृग० | १५ | २५ | मंगल | ८ | ३४ | पुष्य | ४८ |
| २६ | सोम | ९ | ५६ | आर्द्रा | १९ | २६ | बुध | ९ | ३९ | श्लेषा | ५५ |
| २७ | मंगल | १० | ६० | पुन० | २५ | २७ | गुरु | १० | ४५ | मघा | ६० |
| २८ | बुध | १० | ० | पुष्य | ३१ | २८ | शुक्र | ११ | ५० | मघा | १ |
| २९ | गुरु | ११ | ५ | श्लेषा | ३७ | २९ | शनि | १२ | ५४ | पू०फा० | ७ |
| ३० | शुक्र | १२ | ११ | मघा | ४४ | ३० | रवि | १३ | ५७ | उ०फा० | १२ |
| x | x | x | x | x | x | ३१ | सोम | १४ | ५९ | हस्त | १७ |

# संक्षिप्त पञ्चाङ्ग

## ( दिनाङ्क, वार, तिथि, घटी, नक्षत्र, घटीसहित )

### नवम्बर २००५

**कार्तिक-मार्गशीर्ष, सं० २०६२**

| दिनाङ्क | वार | तिथि | घटी | नक्षत्र | घटी |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | मंगल | का०कृ०३० | ६० | चित्रा | २० |
| २ | बुध | ३० | ० | स्वाती | २२ |
| ३ | गुरु | का०शु०२ | ५८ | विशाखा | २२ |
| ४ | शुक्र | ३ | ५५ | अनु० | २२ |
| ५ | शनि | ४ | ५१ | ज्येष्ठा | २० |
| ६ | रवि | ५ | ४७ | मूल | १८ |
| ७ | सोम | ६ | ४१ | पू०षा० | १४ |
| ८ | मंगल | ७ | ३६ | उ०षा० | ११ |
| ९ | बुध | ८ | ३० | श्रवण | ७ |
| १० | गुरु | ९ | २४ | धनिष्ठा | २ |
| ११ | शुक्र | १० | १८ | पू०भा० | ५४ |
| १२ | शनि | ११ | १३ | उ०भा० | ५१ |
| १३ | रवि | १२ | ८ | रेवती | ४८ |
| १४ | सोम | १३ | ३ | अश्विनी | ४७ |
| १५ | मंगल | १४ | ० | भरणी | ४६ |
| १६ | बुध | मार्ग०कृ०१ | ५७ | कृत्तिका | ४६ |
| १७ | गुरु | २ | ५६ | रोहिणी | ४७ |
| १८ | शुक्र | ३ | ५९ | मृग० | ५० |
| १९ | शनि | ४ | ६० | आर्द्रा | ५४ |
| २० | रवि | ४ | १ | पुन० | ५९ |
| २१ | सोम | ५ | ५ | पुष्य | ६० |
| २२ | मंगल | ६ | १० | पुष्य | ५ |
| २३ | बुध | ७ | १५ | श्लेषा | ११ |
| २४ | गुरु | ८ | २१ | मघा | १८ |
| २५ | शुक्र | ९ | २६ | पू०फा० | २४ |
| २६ | शनि | १० | ३० | उ०फा० | ३० |
| २७ | रवि | ११ | ३३ | हस्त | ३४ |
| २८ | सोम | १२ | ३६ | चित्रा | ३८ |
| २९ | मंगल | १३ | ३७ | स्वाती | ४० |
| ३० | बुध | १४ | ३६ | विशाखा | ४१ |
| x | x | x | x | x | x |

### दिसम्बर २००५

**मार्गशीर्ष-पौष, सं० २०६२**

| दिनाङ्क | वार | तिथि | घटी | नक्षत्र | घटी |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | गुरु | मार्ग०कृ०३० | ३४ | अनु० | ४१ |
| २ | शुक्र | मार्ग०शु०१ | ३२ | ज्येष्ठा | ३९ |
| ३ | शनि | २ | २८ | मूल | ३७ |
| ४ | रवि | ३ | २३ | पू०षा० | ३४ |
| ५ | सोम | ४ | १८ | उ०षा० | ३० |
| ६ | मंगल | ५ | १२ | श्रवण | २६ |
| ७ | बुध | ६ | ६ | धनिष्ठा | २२ |
| ८ | गुरु | ७ | १ | शत० | १८ |
| ९ | शुक्र | ९ | ४९ | पू०भा० | १४ |
| १० | शनि | १० | ४५ | उ०भा० | १० |
| ११ | रवि | ११ | ४१ | रेवती | ८ |
| १२ | सोम | १२ | ३७ | अश्विनी | ६ |
| १३ | मंगल | १३ | ३५ | भरणी | ४ |
| १४ | बुध | १४ | ३५ | कृत्तिका | ४ |
| १५ | गुरु | १५ | ३५ | रोहिणी | ६ |
| १६ | शुक्र | पौ०कृ०१ | ३७ | मृग० | ८ |
| १७ | शनि | २ | ४० | आर्द्रा | १२ |
| १८ | रवि | ३ | ४४ | पुन० | १७ |
| १९ | सोम | ४ | ४९ | पुष्य | २२ |
| २० | मंगल | ५ | ५४ | श्लेषा | २९ |
| २१ | बुध | ६ | ५९ | मघा | ३५ |
| २२ | गुरु | ७ | ६० | पू०फा० | ४२ |
| २३ | शुक्र | ७ | ४ | उ०फा० | ४७ |
| २४ | शनि | ८ | ९ | हस्त | ५२ |
| २५ | रवि | ९ | १२ | चित्रा | ५६ |
| २६ | सोम | १० | १४ | स्वाती | ५९ |
| २७ | मंगल | ११ | १५ | विशाखा | ६० |
| २८ | बुध | १२ | १४ | विशाखा | ० |
| २९ | गुरु | १३ | १२ | अनु० | ० |
| ३० | शुक्र | १४ | १० | मूल | ५७ |
| ३१ | शनि | ३० | ६ | पू०षा० | ५४ |